RJPP, Vol. 15, No. 2, 2017, ISSN (P) : 0976-3635, (e) :2454-3411, IMPACT FACTOR 4.0000 (ICRJIFR)
UGC Approved Journal No. 43279

वर्तमान सन्दर्भ में गांधी

डॉ0 वी0 पी0 राकेश
राजनीति विज्ञान विभाग, एन0ए0एस0 कॉलेज, मेरठ।

सारांश

महात्मा गांधी न केवल भारतीय राजनीति, बल्कि समग्र विष्व राजनीति के क्षेत्र में 20वीं षताब्दी के विराटतम व्यक्तित्व हैं। जो लोग उनकी राजनीतिक एवं आर्थिक विचारधारा से सहमत नहीं है, वे भी विदेषी दासता के विरूद्ध हर तरह से बिखरे इस देष को एकजुट करने में उनके योगदान के कायल हैं। वह पहले एसे जननेता थे, जिसने निःषस्त्र जनसमूह की षक्ति को इतिहास में एक ऐसी भौतिक षक्ति के रूप में पहचान दिलायी, जिसने ब्रिटिष साम्राज्य जैसे बड़ी षक्ति– जिसमें कभी सूर्यास्त नहीं होता था–को भी अन्ततः न्याय के समक्ष झुकने को विवष कर दिया था।

शोधपत्र का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः

डॉ0 वी0 पी0 राकेश, ''वर्तमान सन्दर्भ में गांधी'', RJPP 2017, Vol. 15, No.2, pp. 51-56
http://anubooks.com/?page_id=2004
Article No. 8 (RP557)

प्रस्तावना

महात्मा गांधी न केवल भारतीय राजनीति, बल्कि समग्र विश्व राजनीति के क्षेत्र में 20वीं शताब्दी के विराटतम व्यक्तित्व हैं। जो लोग उनकी राजनीतिक एवं आर्थिक विचारधारा से सहमत नहीं है, वे भी विदेशी दासता के विरूद्ध हर तरह से बिखरे इस देश को एकजुट करने में उनके योगदान के कायल हैं। वह पहले एसे जननेता थे, जिसने निःशस्त्र जनसमूह की शक्ति को इतिहास में एक ऐसी भौतिक शक्ति के रूप में पहचान दिलायी, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य जैसे बड़ी शक्ति– जिसमें कभी सूर्यास्त नहीं होता था–को भी अन्ततः न्याय के समक्ष झुकने को विवश कर दिया था।

गांधीजी के अवसान के लगभग सात दषक बाद आज पुनः समूची मानवता अभूतपूर्व संकट के दौर से जूझ रही है। आज जहां विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्रों में हम आश्चर्यजनक उपलब्धियों के युग में रह रहे हैं और दिन प्रतिदिन हो रहे विकास ने आज पूरी दुनिया को समेटकर एक भूमण्डलीयकृत गांव का रूप दे दिया है, वहीं मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं, सामाजिक सरोकारों और पर्यावरण आदि के संदर्भ में हमने बहुत कुछ खोया भी है।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि आज की बहुआयामी चुनौतियों, जिनका सामना व्यक्ति से लेकर समाज, राष्ट्र व समूचे विश्व को करना पड़ रहा हैं, का समाधान तलाशनें में भी क्या गांधी हमें कोई राह सुझा सकते है? इस रूप में वह आज कहां तक प्रासंगिक है?

उत्तर–आधुनिकता के वर्तमान दौर में हमारे अस्तित्व को झझकोरने वाली प्रमुख समस्यायें क्या हैं? प्रारम्भ व्यक्ति से ही करें, क्योंकि वही किसी भी व्यवस्था का आधार है। दिन प्रतिदिन प्राप्त हो रही सूचनाओं के आधार पर कहें, तो आज का व्यक्ति अपने जीवन में अनगिनत उपलब्धियों के बावजूद निरन्तर एकाकी, कुण्ठाग्रस्त, अवसादग्रस्त एवं कभी–कभी आत्महन्ता जीवन की ओर बढ़ रहा है। उसके जीवन में हिंसा– न केवल अन्य लोंगों के प्रति बल्कि स्वयं अपने प्रति भी – की प्रवृत्तियां निरन्तर आकार ले रही हैं। निरन्तर स्पर्धा की दौड़ में उसके जीवन में कहीं संतुष्टि नहीं है। असीमित भोग के बावजूद वह आराम की युक्ति नहीं ढूंढ पा रहा है।

इन्ही बुराईयों से जनित अन्य सम्बद्ध बुराईयां– यथा सामूहिक जीवन में बिखराव, मानवीय मूल्यों का पतन, आपसी तनाव व टकराव एवं तीखे अन्तर्विरोध आदि–का प्रवेश समाज सहित जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हुआ है। वह युवा वर्ग, जो कभी अपने आदर्शवाद व असीम ऊर्जा के कारण किसी भी नई प्रगतिशील क्रान्ति का आधार हुआ करता था, आज उपभोक्तावाद के गलैमर के चलते कुण्ठाग्रस्त एवं परिणामतः किंकर्त्तव्यविमूढ़ है। तथाकथित सफलता के लिए वह शॉर्टकट की तलाश में है, परिणामतः गलैमर की चकाचौंध में दिषा भ्रमित हो अपराध और हिंसा की आत्महन्ता दिशा की ओर अग्रसर है।

ये अधिकांश समस्यायें हमारी वस्तुपरक भोगवादी दृष्टि से उत्पन्न हुई हैं और इन सभी का समाधान हमें गांधी जी की सरल जीवन शैली, नैतिक मूल्यों (सत्य अर्थात अन्तःकरण के अनुरूप आचरण), साधनों की पवित्रता, एकाकी जीवन शैली के बजाए समग्र के साथ जुड़ने एवं शारीरिक श्रम के आह्वान में मिल सकता है।

गांधी जी की विचारधारा का आधारभूत तत्व वह है कि अपने मूल रूप में व्यक्ति और मनुष्य जाति की सभी समस्यायें नैतिक समस्यायें है। ऐसी स्थिति में मनुष्य यदि अपने सभी कार्यो को वस्तुतः सत्य अर्थात अपने अन्तःकरण के अनुसार करे तो समाज और विश्व में दुःख, संकट या समस्या जैसी कोई चीज नहीं रह जायेगी। एक स्वस्थ राजनीतिक समाज और विकासमान व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे एक नैतिक बल या प्रेरणा होनी चाहिए क्योंकि जिस क्षण व्यक्ति अपनी आत्मा की सचेतन आवाज को स्वार्थ के वशीभूमत होकर कुचल देता है, उसी क्षण उसका पषुत्व प्रबल हो उठता है और सभी समस्याओं के प्रति उसके विचार एवं दशश्टिकोण दूषित हो उठते हैं। यहां शिक्षा के क्षेत्र में ''बुनियादी तालीम'' का उनका सिद्धान्त भी हमारा ध्यान आकृष्ट करता है जो ''(व्यक्ति के) हाथ, ... मस्तिष्क तथा ..... आत्मा का समन्वित विकास'' करते हुए व्यक्ति–निर्माण की प्रभावी राह सुझाता है।

आर्थिक विकास के क्षेत्र में कुछ प्रगति होने के बावजूद आर्थिक उदारीकरण के वर्तमान दौर में देश में आर्थिक विषमता की खाई[6] निरन्तर बढ़ी है। एक ओर जहां महानगरों में मुठ्ठीभर लोग तेजी से फलफूल रहे हैं और भोग विलास का जीवन व्यतीत कर रहे हैं ; उनके पास अकूत सम्पत्ति है और उनसे कोई यह पूछने वाला नहीं है कि आखिर उन्होंने इतनी सम्पत्ति कैसे जमा की? वहीं दूसरी ओर देश के गांवों में करोड़ो लोग रह रहे हैं, जो गरीबी रेखा के नीचे हैं। उनके गांवों में न सड़क है, न बिजली और न पीने का पानी। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो0 गुन्नार मिर्डल ने अपनी विश्व प्रसिद्ध कृति ''एशियन ड्रामा'' में लिखा है, ''एशियन देशों में, विशेषकर भारत में, अमीरों और गरीबों के बीच में जो खाई बढ़ रही है, उसका मूल कारण भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार और कर की चोरी करके मुठ्ठीभर लोग और अमीर होते जाते हैं। उनका कोई भी काम सरकारी अफसरों की मुठ्ठी गर्म करने से होता है। यह अमीर और गरीब का भेद तब तक नहीं मिट सकता है, जब तक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर पूरा नियन्त्रण नहीं पा लिया जाये।'' यह एक सुस्थापित तथ्य है कि भ्रष्टाचार का एक बड़ा कारण व्यवस्था में केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति का होना है। यहां उल्लेखनीय है कि पूंजी के एकाधिकार को केवल कुछ इने–गिने हाथों में सीमित होने से बचाने के लिए गांधी जी ने जिस औद्योगिक विकेन्द्रीयकरण का सुझाव दिया था, वह आज भ्रष्टाचार और आर्थिक विषमता की बढ़ती खाई पर अंकुश लगाने में कारगर प्रतीत होता है। यह औद्योगिक विकेन्द्रीयकरण स्वप्नमात्र नहीं है। आधुनिक जापान इसकी सफलता का एक बड़ा उदाहरण है, जहां प्रत्येक ग्रामीण घर प्रचुर मात्रा में विद्युत प्राप्त करता है और उससे घर घर में उद्योग लगे हुए हैं। छोटे कलपुर्जे औद्योगिक विकेन्द्रीयकरण के द्वारा गांवों में घर घर उत्पादित किए जाते हैं। इससे जहां एक ओर बड़े उद्योगों का एकाधिकार रूकता है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी दूर होने के साथ साथ ग्रामीणों की आय भी बढ़ती है। इससे उत्पादन क्षमता बढ़ती है और प्रतिदिन वस्तुओं का मूल्य भी बढ़े उद्योगों की तुलना में कम रहता है। यही उदाहरण भारत में पंजाब के कुछ भागों में भी आशातीत सफलता के साथ प्रयुक्त हुआ है। गांधी जी अंधाधुंध रफ्तार वाले विकास के पश्चिमी मॉडल के विरूद्ध थे और मानते थे कि केवल लोभ के लिए उत्पादन करना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना आवश्यकता के अनुसार उत्पादन करना। इसलिए वह अर्थतन्त्र

को सीमित करने के पक्ष में थे ताकि पूंजी का विनाशक स्वरूप शोषण और भ्रष्टाचार का जाल न फैला सके। विकास के अपने मॉडल में उन्होंने चरखा, हथकरघा एवं ग्रामीण और कुटीर उद्योगो को जो प्रोत्साहन दिए जाने की बात कही थी, उसके पीछे जहां एक ओर औद्योगीकरण के लिए विदेशी ऋण व सहायता पर निर्भर होने के बजाए अपने ही देश के मानवीय और भौतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करने की भावना थी, वहीं दूसरी ओर व्यक्ति के नैसर्गिक चरित्र को बचाए रखने, उसका प्रकृति के साथ तादाम्य बनाए रखने की जिजीविशा भी थी। नोबेल पुरस्कार प्राप्त प्रथम भारतीय अर्थशास्त्री प्रो0 अमर्त्य सेन ने गरीबी, अकाल, भुखमरी और बुनियादी सामाजिक सेवाओं के सन्तुलित, समतापरक विस्तार–विकास की जो बातें कहीं है, वह सब गांधी जी की आर्थिक दृष्टि के एकदम निकट है। गांधी जी की आर्थिक और शैक्षिक दृष्टि जनसंख्या नियन्त्रण के वर्तमान प्रयासों में भी किन्हीं अंशों में प्रासंगिक है, यद्यपि परिवार नियोजन के लिए वह आधुनिक उपायों को अपनाने के विरोधी थे और इसके बजाय प्राकृतिक संयम अर्थात ब्रह्मचर्य अपनाये जाने के पक्षधर थे। कुछ समय पूर्व अमेरिका की वांशिंगटन स्थित विश्वप्रसिद्ध संस्था ''वर्ल्ड वॉच'' ने एक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी, जिसके अनुसार भारत में जनसंख्या विस्फोट की समस्या शत्रु देशों के आक्रमण से कहीं ज्यादा गम्भीर है। कभी हमने सोचा है कि क्यों हमारे यहां जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम पूरी तरह सफल नहीं हो पा रहे है? वस्तुतः इसका मूल भी गरीबी और अशिक्षा की समस्या में निहित है। प्रायः देखा गया है कि गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली देश की लगभग एक तिहाई आबादी को आज भी जनसंख्या नियंत्रण योजनायें व कार्यक्रम अपील ही नहीं कर पाते । इन्हें लगता है कि गरीबी से लड़ने और रोजी रोटी कमाने में अधिक बच्चे अधिक मदद्गार होंगे। इसलिए यदि गांधी जी के आर्थिक स्वावलंबन एवं बुनियादी तालीम (जिसमें 14 वर्ष की आयु तक सभी बच्चों के लिए राज्य की ओर से अनिवार्य और निःशुल्क सर्वांगीण शिक्षा के प्रबन्ध की बात कही गई है) के सिद्धान्तों के अनुरूप इन वर्गों को साक्षरता के साथ साथ आर्थिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी सुरक्षा उपलब्ध करायी जाये तो इन लोगों को अपने जीवन–स्तर के उन्नत बनने के कुछ अवसर दिखायी देंगे और उसकी आकांक्षा में ये सीमित परिवार की ओर आकृष्ट होंगे।

राजनीतिक क्षेत्र में आज भ्रष्टाचार, राजनीतिक मूल्यों के पतन, राजनीति के अपराधीकरण, साम्प्रदायिकता, जातिवाद एवं हिंसा आदि ने विकास जैसे सार्थक मुद्दे हाशिए पर लाकर आम आदमी के व्यवस्था में विश्वास को बुरी तरह हिलाकर रख दिया है। आज आम आदमी नहीं समझ पा रहा है कि वर्तमान परिदृश्य में राजनीतिक व्यवस्था को पुनः सही पटरी पर लाने में उसकी क्या भूमिका हो सकती है? यहां पुनः गांधी अपने समग्र प्रभाव के साथ प्रासंगिक हो उठते है। जीवन के प्रति गांधी जी का दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक था। वह कर्म की सत्ता में विश्वास करते थे, यदि वह आज जीवित होते तो बढ़ते भ्रष्टाचार और हिंसा के मूकदर्शक बने रहने के बजाए सम्भवतः अपनी पूरी शक्ति के साथ अन्याय, शोषण एवं हिंसा के विरूद्ध संघर्ष कर रहे होते। उनका स्पष्ट मत था, ''उस समय तक मैं धार्मिक जीवन नहीं व्यतीत कर सकता, जब कि मैं स्यय को समग्र मानवता के साथ एकीकृत नहीं कर लेता और यह मैं उस समय तक नहीं

कर सकता जब तक कि राजनीति में भाग नहीं लेता।'' साथ ही उनका यह भी स्पष्ट मत था कि राजनीति का आधार धर्म (पंथ नहीं, धारण करने योग्य = नैतिकता) होना चाहिए। राजनीतिक क्षेत्र में उन्होंने साध्य एवं साधन का, सत्य (अन्तःकरण) एवं अहिंसा का तथा राजनीतिक संघर्ष के लिए सत्याग्रह की जिस तकनीक का प्रतिपादन किया था, यहां वह विशेष रूप से प्रासंगिक है। गांधी जी के सत्याग्रह एवं जनांदोलन का विकल्प एक व्यथित आम आदमी को राजनीतिक व्यवस्था को पुनः सही पटरी पर लाने की दिशा में उसकी भूमिका का मार्ग दिखा सकता है। जनांदोलन का यह मार्ग अपनाकर न केवल अमेरिका में अश्वेत नेता मार्टिन लूथर किंग और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला ने रंगभेद के विरूद्ध अपूर्व सफलता प्राप्त की, बल्कि आज भी तिब्बत, म्यान्मार आदि दुनिया के अनेक क्षेत्रों में राजनीतिक संघर्ष को दिशा मिल रही है।

आतंकवाद आज न केवल एक राष्ट्रीय बल्कि पूरी दुनिया के लिए गंभीर चिन्ता का विषय बना हुआ है जिसे यदि रोकना है तो मात्र कानून और व्यवस्था का मुद्दा न मानकर उसके आधारभूत कारणों –संसाधनों एवं विकास के लाभों के असमान वितरण व तद्जनित घृणा का भाव – को समझने एवं उन्हें निराकृत करने की दिशा में बढ़ना होगा। गांधी जी ने कहा था कि ''शोषण हिंसा हैं''। अर्थात शोषण से ही हिंसा पनपती है। आज दुनिया के अधिकांश आय के संसाधन संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकार में है। कमजोर राष्ट्रों के हितों की निरन्तर अनदेखी की जा रही है। विकास के लाभ और और संसाधन प्रत्येक राष्ट्र व प्रत्येक वर्ग तक पहुंचेंगे, तभी घष्णा समाप्त होगी।

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी क्षेत्रों के लोगों की बुनियादी जरूरतों के प्रति संवेदनशील और जवाबदेह व्यवस्था का निर्माण करना होगा। देश के प्रत्येक वर्ग और क्षेत्र को विकास की मुख्य धारा में लाना होगा तभी राजनीतिक अंसतोश, हताशा और आतंकवाद के उलट राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया को मजबूती मिल सकेगी।

इसी तरह पर्यावरण प्रदूषण व बिगड़ता परिस्थितिकीय संतुलन आज समग्र विश्व के लिए गम्भीर चिन्ता का विषय बना हुआ है। अंधाधुंध रफ्तार वाले विकास के पश्चिमी मॉडल के चलते एवं प्राकृतिक संसाधनों के बिना सोचे समझे दोहन से आज विश्व का प्राकृतिक संतुलन बुरी तरह बिगड़ चुका है। पृथ्वी के रक्षा कवच–ओजोन लेयर– जो कि विकिरण से हमारी रक्षा करता है– तक में इस परिस्थितिकीय संतुलन के बिगड़ने के कारण बड़े छेद हेने की सूचनाएं हैं, जिससे हमारे वैज्ञानिक बहुत चिंतित है। इससे सीधा विकिरण पृथ्वी पर आ रहा है और तरह–तरह के रोग बढ़ रहे है। इसी तरह जल के स्रोत लगातार सूखने के कारण आज कहा जा रहा है कि तृतीय विश्व युद्ध पानी के प्रश्न पर होगा। आज जल–सरंक्षण किए जाने की जरूरत महसूस की जा रही है। गांधी जी ने आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व बता दिया था कि ''धरती के पास हमारी सभी आवश्यकताएं तो पूरी करने की सामार्थ्य है किन्तु हमारे लोभ को नहीं।'' विकास की अंधाधुंध रफ्तार वाले पश्चिमी मॉडल का, उपभोक्तावाद का उन्होनें निरन्तर विरोध किया था, जो आज बहुत प्रासंगिक है। उनका मानना था कि दुनिया में जितने आय के स्रोत हैं, वे सीमित है। इसलिए हमें अपने जीवन में सादगी और सयंम लाना होगा। कुटीर उद्योगों एवं खादी का जो

समर्थन उन्होंने किया था, उसके पीछे विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था एवं स्वावलम्बी ग्रामराज्य की अवधारणा तो थी ही, साथ ही यह सब आज की शब्दावली में बात करें तो, इको फ्रैन्डली टैक्नोलॉजी को समर्थन भी था, जिससे किसी प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण की सम्भावना न हो। आज जिस षाष्वत विकास (सस्टेनेबिल डेवलपमैन्ट) की बात कही जा रही है, उसका भी प्रतिपादन एवं समर्थन हम गांधी में पाते हैं।

सारत : आज व्यक्ति से लेकर समाज, राज्य एवं अन्तराष्ट्रीय पटल तक शायद ही कोई ऐसी समस्या होगी, जिसका समाधान गांधी जी के पास न हो। वस्तुतः प्रगति एवं विकास की कोई भी अग्रधारा गांधी से कटकर नहीं जा सकती है। सम्भवतः आज उनका कोई दूसरा विकल्प है ही नहीं।

संदर्भ :

1. ''बढ़ रही है आत्महत्या की प्रवषत्ति'', अमर उजाला, 11.03.2013

2. यंग इण्डिया, जनवरी 21, 1926

3. हिन्द स्वराज, पृ0 48 –महात्मा गांधी – ''एथिकल रिलीजन'', पृ0 91–92

4. गांधी – ''एथिकल रिलीजन'', पृ0 58

5. हरिजन, 29.06.1935

6. डॉ0 गौरीशंकर राजहंस– ''कैसे मिटेगा इंडिया और भारत का भेद'', हिन्दुस्तान, 15 अगस्त, 1999

7. रामजी सिह –''गांधियन विजन'', मानक पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1998, पृ0 236

8. डॉ0 गौरीशंकर राजहंस–वही

9. डॉ0 पुरूषोत्तम नागर –''आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन'', राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1994, पृ0 436

10. हरिजन, 29.06.1935

11. राजकिशोर –''छह में से एक का दर्द'', नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 28.09.1999

12. चन्द्रशेखर धर्माधिकारी – ''आजादी मिली, लेकिन मुक्ति कहां?'', नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, 18. 09.2000

13. गांधी – ''गीता द मदर'', पृ0 65

14. रामजी सिह – वही, पृ0 234

15. धीरेन्द्र मोहन दत्त कृत ''महात्मा गांधी का दर्शन'' में उद्धृत, पृ0 64

16. द कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड 1, पृ0 129

17. मेजर जनरल अफसर करीम –''सिर्फ सशस्त्र कार्यवाही से हल नहीं हो सकता यह मसला'', अमर उजाला 23.01.2015

18. ''खतरे की घंटी है वनों का कम होना'', अमर उजाला, 04.03.2000

19. ''बूंद–बंद को तरस जायेंगे हम'', अमर उजाला, 26.03.2016